प्रकाशनार्थ।

30 सितम्बर, गोरखपुर।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 54 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 9 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अंतर्गत आयोजित संगोष्ठी के क्रम में चौथे दिन " संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति " विषयक संगोष्ठी के मुख्य वक्ता लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कुलपति प्रो मुरली मनोहर पाठक ने अपने संस्कृत उद्बोधन में कहा कि भारत की प्रतिष्ठा संस्कृत और संस्कृति से हीं है । हमारी संस्कृति ,संस्कृत भाषा पर आधारित है। जो हमारे आचार, विचार व व्यवहार में प्रयोग में की जाती है, उसे संस्कृति कहते हैं। हमारे सभी संस्कार संस्कृति के परिचायक हैं और वह सभी संस्कार संस्कृत भाषा के माध्यम से ही किए जाते हैं। हमारी संस्कृति में प्रातःकाल जागरण से लेकर रात्रि पर्यंत हमारी क्रियाएं संस्कृत में लिखित शास्त्रीय विधियों पर आधारित हैं। हमारी संस्कृति में अपने हथेली में भगवान् का दर्शन करते हुए माता रूपी पृथ्वी को प्रणाम करके हीं पृथ्वी पर पैर रखते हैं।

प्रो पाठक ने बताया कि हमारी संस्कृति सूर्य को पिता और पृथ्वी को माता मानती है। इन दोनों के बीच में हम शिशु के रूप में कीड़ा करते रहते हैं ।

उन्होने कहा कि संस्कृत भाषा विश्व की भाषाओं का दिग्दर्शन करती है। यह भाषा विश्व के संपूर्ण मानव जाति को जीवन का आदर्श सिखाती है । भारत यदि संस्कृत और भारतीय संस्कृति को आगे करके कार्य करेगा तो शीघ्र ही विश्व गुरु पद को प्राप्त करेगा। संस्कृत के शास्त्र ही हमें सिखाते हैं कि 'धर्मो रक्षति रक्षितः'। धर्म के अनुसार किया जाने वाला कर्म इस लोक और परलोक दोनों में कल्याणकारी होती है। हमारा सौभाग्य है कि वर्तमान प्रधानमंत्री संस्कृत और संस्कृति को जीने वाले हैं । उनके प्रयास से संपूर्ण विश्व में संस्कृत और भारतीय संस्कृति का सम्मान बढ़ा है।

उन्होंने भरोसा दिलाते हुए कहा, मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा देश संस्कृत के माध्यम से शीघ्र विश्व गुरु बनेगा।

सतुआ बाबा आश्रम काशी से पधारे महंत संतोषदास जी महाराज ने कहा कि संस्कृत और भारतीय संस्कृति का गहरा संबंध है। भारतीय संस्कृति आज पूरे विश्व में सम्मान पा रही है। आज हमारे प्रधानमंत्री को दूसरे देश के प्रधानमंत्री पैर छू कर प्रणाम करते हैं। हमें गर्व करना चाहिए कि वो हमारे प्रधानमंत्री के साथ-साथ हमारी संस्कृति को भी सम्मानित कर रहे हैं। संस्कृत और भारतीय संस्कृति सबके कल्याण की कामना करती है यही इसकी विशेषता है।

वडोदरा से पधारे महंत गंगादास जी महाराज ने कहा कि संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना करना भी संभव नहीं है । नासा के अनुसार विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में सबसे स्पष्ट बोली जाने वाली भाषा संस्कृत ही है। इसको बोलने से रक्तचाप सही रहता है। आज आवश्यकता है कि संस्कृति को सरकार सभी विद्यालयों में अनिवार्य करें । हमें इस भाषा को केवल धार्मिक भाषा न समझकर इसे जन भाषा बनाने के लिए संकल्पित होना पड़ेगा।

विशिष्ट वक्ता उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ के पूर्व अध्यक्ष प्रो सदानंद गुप्ता ने कहा कि ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी एवं ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के लिए जीवन भर प्रयासरत रहे । उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक जितनी भी बोली जाने वाली भाषाएं हैं सभी संस्कृत से निकली हुई है । संस्कृत भारत कि आत्मा है। इसका वांग्मय बहुत विशाल है। इसमें लिखित पांडुलिपियों की संख्या 2 करोड़ के लगभग है इसी से हम संस्कृत की विशालता का अनुमान लगा सकते हैं। संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान सहित सभी कलाओं का अपरिमित भंडार है ।इसमें लिखे हुए शास्त्र न केवल शारीरिक ज्ञान विज्ञान की बात करते हैं अपित परलोक का भी वर्णन करते हैं । इसमें लिखित वृहत्कथा व पंचतंत्र की कथाएं पूरे विश्व को शिक्षा दे रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला संस्कृत ही है।इसमें लिखा वेद, पुराण, स्मृतियां ,आयुर्वेद, दर्शन, आदि विद्याएं पूरे विश्व को अपने ज्ञान से आलोकित कर रहे हैं । संस्कृत केवल भाषा ही नहीं है अपितु भारतीय संस्कृति की प्रवाहिका है । यदि हमें अपनी भारतीय संस्कृति को पूरे विश्व में विस्तारित करना है तो हमें संस्कृत का आश्रय लेना होगा। प्राचीन काल में संस्कृति को धर्म का प्रस्फुटन माना जाता था।

अध्यक्षयीय उद्बोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष पूर्व कुलपति प्रो उदय प्रताप सिंह ने कहा कि संस्कृत भाषा में समस्त ज्ञान का स्रोत है। हमारे वेदों में वैदिक गणित का वर्णन है जिसमें जादुई फार्मूले वर्णित है जिसको प्रत्येक भारतीय को पढ़ना चाहिए, यही नहीं पूरी भारतीय ज्ञान परंपरा संस्कृत में ही विद्यमान है। पूरे विश्व को एक परिवार मानने की भावना इसी संस्कृत भाषा में मिलती है। सर्वे भवंतु सुखिनः, यह सर्वजन कल्याण की बात संस्कृत भाषा ही करती है । गो,गंगा ,गायत्री और गीता को मां मानना हमारी संस्कृति है । अपने देश को भारत माता कहना हमारी ही संस्कृति है ।यही विश्व में हमको विशेषता प्रदान करती है। संस्कृत नें मानव कल्याण के लिए ओम जैसा महान शब्द दिया।

वैदिक मंगलाचरण डॉ रंगनाथ त्रिपाठी , गोरक्षाष्टक पाठ आदित्य पांडेय व गौरव तिवारी तथा संचालन माधवेंद्र राज ने किया । इस अवसर पर ब्रह्मचारी दासलाल , महंत शिवनाथ जी महाराज, योगी कमलनाथ जी, महंत मिथलेशनाथ जी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।